लखनऊ में प्रतिवर्ष 100 ब्रह्मोस मिसाइलें बनेंगी : राजनाथ

जागरण संवाददाता, लखनऊ

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ब्रह्मोस इंटीग्रेशन एंड टेस्टिंग फैसिलिटी सेंटर के उद्घाटन के मौके पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा, यहां थलसेना, वायुसेना व नौसेना के लिए प्रतिवर्ष 80 से 100 ब्रह्मोस मिसाइलें बनेंगी। उप्र डिफेंस इंडस्ट्रियल कारिडोर में अब तक 34 हजार करोड़ रुपये के प्रस्तावित निवेश के साथ 180 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। 4,000 करोड़ का निवेश हो चुका है। विमान निर्माण, यूएवी, ड्रोन, गोला-बारूद, छोटे हथियार, कपड़ा और पैराशूट उत्पादन के क्षेत्र में प्रमुख निवेश किए गए हैं। लखनऊ में ही पीटीसी इंडस्ट्रीज लिमिटेड टाइटेनियम व सुपर अलाय मटीरियल प्लांट शुरू कर रही है। इसके अलावा सात अतिरिक्त महत्वपूर्ण परियोजनाओं की नींव रखी जा रही है।

शक्ति ही शक्ति का सम्मान करती है : रक्षा मंत्री ने कहा, आज नेशनल टेक्नोलाजी डे है। आज ही के दिन 1998 में पोखरण परमाणु परीक्षण करके भारत ने दुनिया को अपनी ताकत दिखाई थी। टेक्नोलाजी डे के दिन ऐसी उच्चस्तरीय तकनीकी इकाई का उद्घाटन करना यादगार क्षण है। कहा कि भारत आज सबसे शक्तिशाली देशों में से एक है। लखनऊ का यह केंद्र भारत की शक्ति को और मजबूत करने में मदद करेगा। ब्रह्मोस का उत्पादन अभी तिरुवनंतपुरम, नागपुर, हैदराबाद और पिलानी में होता है। लखनऊ इसकी पांचवीं प्रोडक्शन यूनिट होगी, लेकिन सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस नेक्स्ट जनरेशन (एनजी) का उत्पादन केवल लखनऊ में होगा। 15 माह में इसका भी उत्पादन शुरू हो जाएगा। रक्षा मंत्री ने डिफेंस कारिडोर के तहत पीटीसी इंडस्ट्रीज के टाइटेनियम व सुपरएलाय सेंटर का शुभारंभ भी किया। इस सेंटर की टाइटेनियम की उत्पादन क्षमता 6,000 टन प्रतिवर्ष होगी।

लखनऊ में रविवार को ब्रह्मोस एयरोस्पेस इंटीग्रेशन एंड टेस्टिंग फेसिलिटी का नई दिल्ली से वर्चुअली उद्घाटन करते रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह व कार्यक्रम स्थल पर मौजूद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ साथ में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक, औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नंदी, विधायक राजेश्वर सिंह व अन्य। जागरण

अचूक है ब्रह्मोस

- ब्रह्मोस अचूक है। इसकी अधिकतम गति 2.8 से 3.0 मैक (ध्वनि की गति से तीन गुना, लगभग 3430 किमी. प्रति घंटे) तक होगी। रेंज 290 से 400 किलोमीटर की होगी।
- वजन और लागत मौजूदा ब्रह्मोस मिसाइल से आधी होगी। अभी तैयार होने वाली ब्रह्मोस मिसाइल का वजन 2900 किलोग्राम होगा, जबकि एनजी तकनीक की मिसाइल का वजन घटकर 1260 किलोग्राम हो जाएगा।
- वजन कम होने से सुखोई विमान में एक की जगह पांच मिसाइलें तक लोड हो सकेंगी। थलसेना के सिस्टम से एक साथ तीन की जगह छह मिसाइलें लोड होंगी। नौसेना के युद्धपोत की क्षमता भी बढ़ेगी।
- इसका निर्यात इंडोनेशिया, वियतनाम, फिलिपींस, अफ्रीका जैसे कई देशों को होगा।